

म्हे तो निकलग्या खाटूधाम से

म्हे तो निकलग्या खाटूधाम से,
पण म्हासूँ ना निकल्यो खाटूधाम।
साँवरिया म्हाने ओठों बुला ल्यो जी,
खाटू का राजा पाछो बुला ल्यो जी॥

हेत लग्यो ऐसो कैसो साँवरिया,
सुपणे में आवे थारी खाटू नगरिया।
थे ही दीखो हो चारों मेर में,
चाहे सुबहे हो चाहे शाम।
बस म्हारो म्हारै मन पे ना चाल्यो जी,
दयालू दाता हेत बढाज्यो जी ॥

सुध म्हारी ज्युँ जाणो बाबा त्युँ लीज्यो,
मिलके बिछड़नो म्हासूँ ना कीज्यो।
बीज यो बोया थे ही साँवरा,
बीज ने दीज्यो उपजाय।
बागां में फूलड़ा थे ही खिलावो जी,
बागां का माली थे ही कुहावो जी॥

देखे जो ना दिनु थाणे मणड़ो यो तड़पे,
आग कालजड़े में मिलणे की धधके।
भाव का भूखा थे हो साँवरा,
घूम्यो मैं तो सारो संसार।
जो मिल्यो म्हाने यो ही समझायो जी,
हारे को साथी थारो नाम बतायो जी॥

साँवरिया म्हाने ओठों बुला ल्यो जी,
खाटू का राजा पाछो बुला ल्यो जी॥

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36073/title/meh-to-nikal-gaya-khatudham-se>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |